SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# कक्षा - 10

## सामाजिक विज्ञान

## भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 4

# औद्योगीकरण का युग

भाग - 2

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

काम की तलाश में निकले लोग,
दि इलस्ट्रेटड लंदन न्यूज, 1879



- कुछ लोग छोटीमोटी चीजें बेचते और अस्थायी काम तलाशते हुए हमेशा एक जगह से दूसरी जगह भटकते रहते थे।

## हाथ का श्रम और वाष्प शक्ति

- विक्टोरिया कालीन ब्रिटेन में मानव श्रम की कोई कमी नहीं थी।
- गरीब किसान और बेकार लोग कामकाज की तलाश में बड़ी संख्या में शहरों को जाते थे।
- जब श्रमिकों की बहुतायत होती है तो वेतन गिर जाते हैं।
- इसलिए उद्योगपतियों को न तो श्रमिकों की कोई कमी थी और ना ही उनके वेतन के मद में कोई भारी लागत लगती थी।

## मौसमी आधार पर मजदूरों की माँग

- बहुत सारे उद्योगों में श्रमिकों की माँग मौसमी आधार पर घटती बढ़ती रहती थी।
- गैसघरों और शराबखानों में जाड़ों के दौरान खासा काम रहता था। इस दौरान उन्हें ज्यादा मजदूरों की जरूरत होती थी।
- क्रिसमस के समय बुक-बाइंडरों और प्रिंटरों को भी दिसम्बर से पहले अतिरिक्त मजदूरों की दरकार रहती थी।
- बंदरगाहों पर जहाजों की मरम्मत और साफ-सफाई व सजावट का काम भी जाड़ों में ही किया जाता था।
- जिन उद्योगों में मौसम के साथ उत्पादन घटता बढ़ता रहता था वहाँ उद्योगपति मशीनों की बजाय मजदूरों को ही काम पर रखना पसंद करते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# मौसम



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

## इनसानी निपुणता

- बहुत सारे उत्पाद ऐसे थे जो केवल हाथ से ही तैयार किये जा सकते थे।
- मशीनों से तो एक जैसे तथा तय किस्म के उत्पाद ही बड़ी संख्या में बनाये जा सकते थे।
- लेकिन बाजार में अकसर बारीक डिजाइन और खास आकारों वाली चीजों की काफी माँग रहती थी।
- उदाहरण के लिए :- 19वीं सदी के मध्य में ब्रिटेन में 500 तरह के हथोड़े तथा 45 तरह

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इन्हें बनाने के लिए मशीनों की नहीं बल्कि इनसानी निपुणता की ज़रूरत थी।
- विक्टोरिया कालीन ब्रिटेन में उच्च वर्ग के लोग जैसे-कुलीन और पूँजीपति वर्ग, हाथों से बनी चीज़ों को तरजीह देते थे।
- हाथों से बनी चीज़ों को परिष्कार और सुरुचि का प्रतीक माना जाता था।
- उनकी फिनिश अच्छी होती थी।
- उनको एक-एक करके बनाया जाता था और उनका डिज़ाइन अच्छा होता था।
- मशीनों से बनने वाले उत्पादों को उपनिवेशों में निर्यात कर दिया जाता था।
- जिन देशों में मज़दूरों की कमी होती है वहाँ उद्योगपति मशीनों का इस्तेमाल करना ज़्यादा पसंद करते हैं ताकि कम से कम मज़दूरों का इस्तेमाल करके वे अपना काम चला सकें।
- 19वीं सदी के अमेरिका में यही स्थिति थी। लेकिन ब्रिटेन में कामगारों की कोई कमी नहीं थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# मशीन

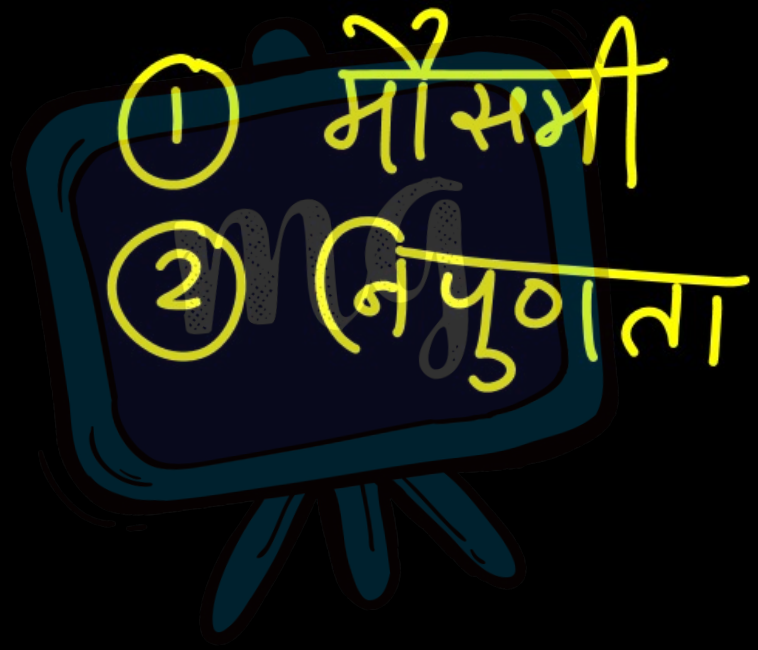

1. मौसमी
2. निपुणता

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

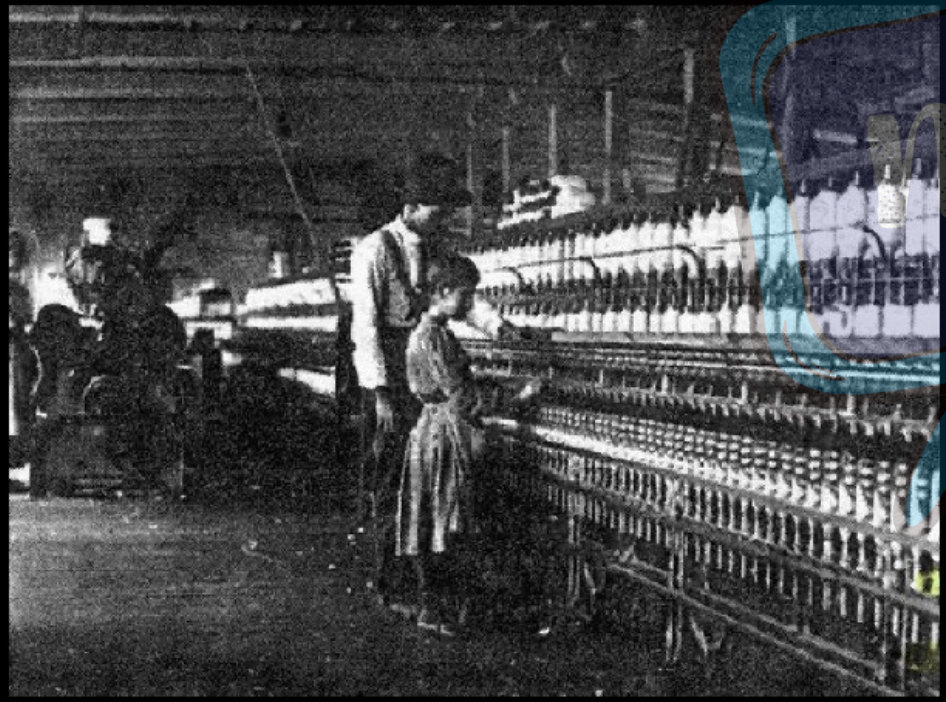

## मजदूरों की जिंदगी

- बाज़ार में श्रम की बहुतायत से मज़दूरों की ज़िंदगी भी प्रभावित हुई।
- जैसे ही नौकरियों की खबर गाँवों में पहुँची सैकड़ों की तादाद में लोगों के हुजूम शहरों की तरफ चल पड़े।
- नौकरी मिलने की संभावना यारी-दोस्ती, कुनबे-कुटुंब के जरिए जान-पहचान पर निर्भर करती थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- अगर किसी कारखाने में आपका रिश्तेदार या दोस्त लगा हुआ है तो नौकरी मिलने की संभावना ज़्यादा रहती थी।
- सबके पास ऐसे सामाजिक संपर्क नहीं होते थे।
- रोज़गार चाहने वाले बहुत सारे लोगों को हफ्तों इंतज़ार करना पड़ता था।
- वे पुलों के नीचे या रैन-बसेरों में रातें काटते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ बेरोज़गार शहर में बने निजी रैनबसेरों में रहते थे।
- बहुत सारे निर्धन कानून विभाग द्वारा चलाए जाने वाले अस्थायी बसेरों में रुकते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

8 × 4




## मौसमी काम और मजदूर

- बहुत सारे उद्योगों में मौसमी काम की वजह से कामगारों को बीच-बीच में बहुत समय तक खाली बैठना पड़ता था।
- काम का सीज़न गुजर जाने के बाद गरीब दोबारा सड़क पर आ जाते थे।
- कुछ लोग जाड़ों के बाद गाँवों में चले जाते थे जहाँ इस समय काम निकलने लगता था।
- लेकिन ज़्यादातर शहर में ही छोटा-मोटा काम ढूँढ़ने की कोशिश करते थे जो 19वीं सदी के मध्य तक भी आसान काम नहीं था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मौसमी

8 × 4 = 32

## मजदूरों के वेतन

- 19वीं सदी की शुरुआत में वेतन में कुछ सुधार आया।
- लेकिन इससे मज़दूरों की हालत में सुधार हुआ या नहीं यह पता नहीं चलता। क्योंकि आंकड़े सही स्थिति नहीं दर्शा पाते।
- अलग-अलग व्यवसायों के औसत आंकड़ों का फर्क तथा प्रतिवर्ष होने वाले उतार-चढ़ाव छिपे रह जाते थे।

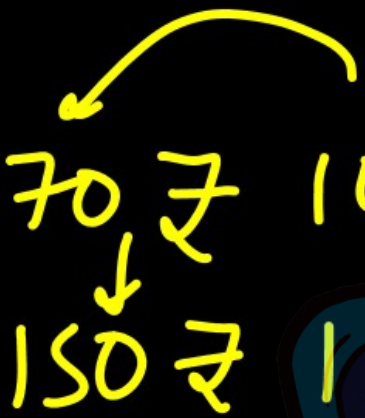


30

- मिसाल के तौर पर, जब लंबे नेपोलियनी युद्ध के दौरान कीमतें तेज़ी से बढ़ीं तो मज़दूरों की आय के वास्तविक मूल्य में कमी आ गई।
- इसका अर्थ यह है कि अब उन्हें वेतन तो पहले जितना मिलता था लेकिन उससे वे पहले जितनी चीजें नहीं खरीद सकते थे।
- मज़दूरों की आमदनी सिर्फ प्रतिदिन के वेतन से ही नहीं लगा सकते थे रोजगार की अवधि भी बहुत महत्वपूर्ण थी यानि उन्होंने कितने दिन काम किया है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER




## बेरोजगारी

- 19वीं सदी के मध्य में सबसे अच्छे हालात में भी लगभग 10 प्रतिशत शहरी आबादी निहायत गरीब थी।
- 1830 के दशक में आई आर्थिक मंदी जैसे दौर में बेरोज़गारों की संख्या विभिन्न क्षेत्रों में 35 प्रतिशत से 75 प्रतिशत तक पहुँच जाती थी।
- बेरोजगारी की आशंका के कारण मज़दूर नयी प्रौद्योगिकी से चिढ़ते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

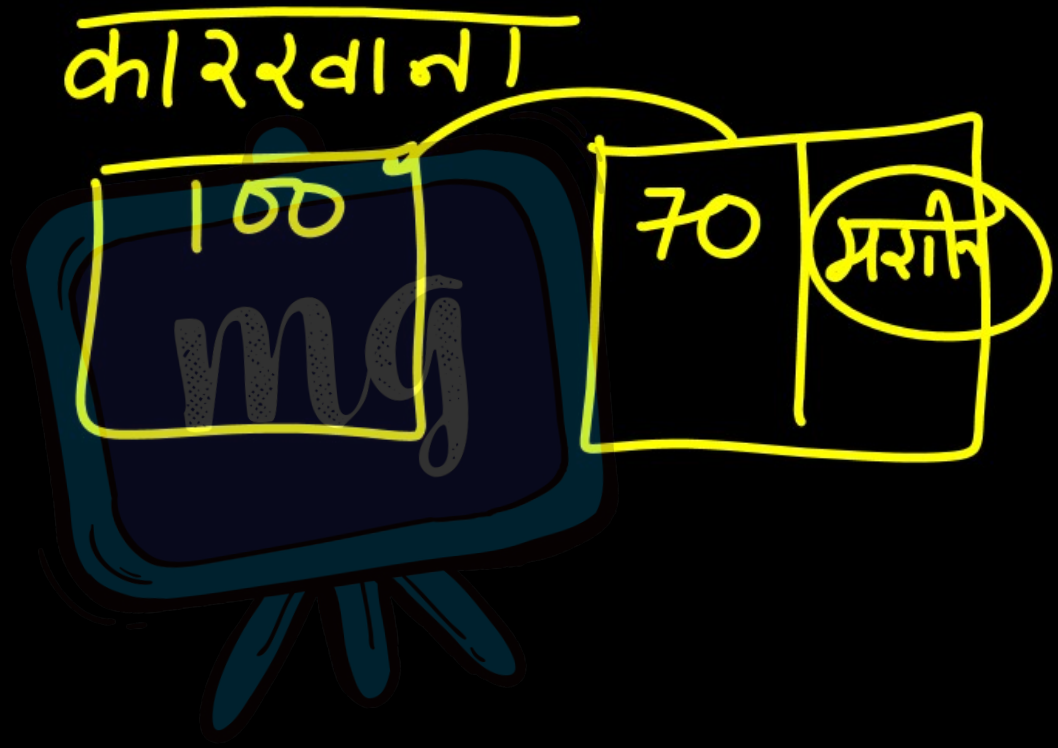

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 1764 में जेम्स हारग्रीब्ज ने स्पिनिंग – जेनी नामक ऊन कातने की मशीन बनाई तो इस मशीन ने कताई की प्रक्रिया तेज कर दी और मजदूरों की माँग घटा दी।
- एक पहिये को घुमाकर मजदूर बहुत सारी तकलियों को घुमा देता था और एक साथ कई धागे बनने लगते थे।
- अब जब ऊन उद्योग में इस मशीन का इस्तेमाल शुरू किया गया तो हाथ से ऊन कातने वाली औरतें इस तरह की मशीनों पर हमला करने लगीं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- जेनी के इस्तेमाल पर यह टकराव लंबे समय तक चलता रहा।

स्पिनिंग जेनी, टी.ई. निकल्सन द्वारा बनाया गया चित्र 1835

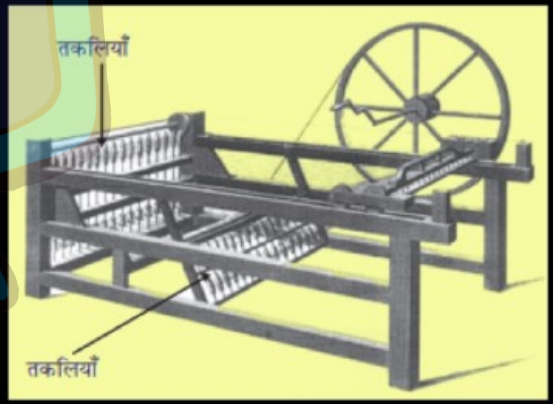


- एक ही पहिये से कई सारी तकलियाँ घूमने लगती थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मशीनें ↓ → मौसमी व्यापार
→ निपुणता

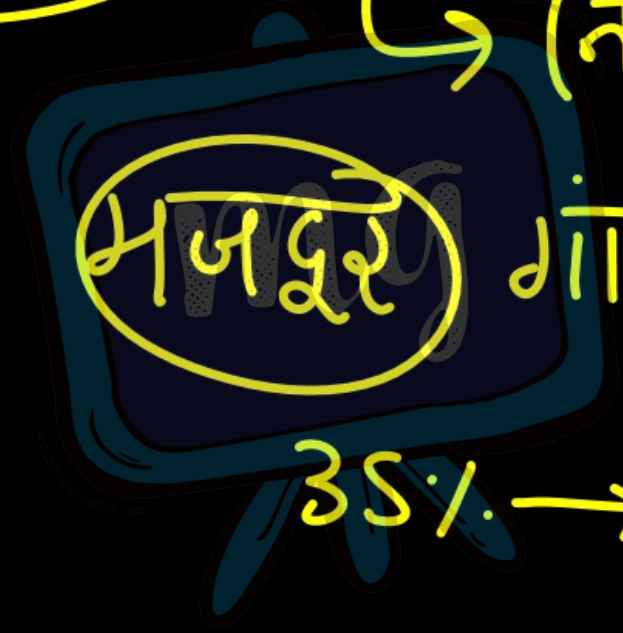

मजदूरे गाँव → शहर

३५% → ७५%